डॉ. बिजोय मिश्रा

हार्वर्ड विश्वविद्यालय के प्रतिष्ठित भौतिक विज्ञानी एवं संस्कृत विद्वान। कवि के तौर पर न्यू इंग्लैंड, दक्षिण एशिया के अनेक देशों में चर्चित एवं सफल यात्राएँ कीं। अनेक गरिमापूर्ण कवि सम्मेलनों में भागीदारी। विगत १८ बरसों से हार्वर्ड विश्वविद्यालय में सालाना भारतीय कविता पाठ का आयोजन कर रहे हैं।

सम्पर्क : १८०, बेडफोर्ड रोड, लिंकन, एमए. ईमेल : Misra.bijoy@gmail.com

विमर्श

रामायण : आधुनिक विमर्श

अँग्रेजी से हिन्दी अनुवाद **सुधांशु मिश्रा**

रामायण के शब्द, रस और भाव की थोड़ी-बहुत समझदारी बढ़ सके इस उद्देश्य से अभी एक साल हुए कुछ संस्कृत-प्रेमी साथियों के साथ मैं वाल्मीकि रामायण पढ़ रहा हूं। एक वाक्य में कहना हो तो यही कहना पर्याप्त रहेगा कि वाल्मीकि की कृति एक दिव्य रचना है। इसके शब्दों की गहराई, वाक्य-विन्यास और व्यंजना मेरे जैसे साधारण समझ वाले व्यक्ति के लिए कुछ भारी पड़ती है। प्रत्येक श्लोक अपने में ऐसी पूर्णता लिए है कि दांतों तले अंगुली दबानी पड़े और चित्त तन्मय व मुग्ध अगले श्लोक की प्रतीक्षा में जुट जाए। इतनी सारी बातें वाल्मीकि को भला कैसे पता चलीं? क्या तत्कालीन समाज वाकई वैसा आभामय, परिष्कृत, सुसंस्कृत और भव्य था? वाल्मीकि ने उनका ऐसा बारीक विवरण चित्रित किया है कि मानों सारा कुछ आंखों के सामने घट रहा हो। इतनी कुशलता से राजकीय आडम्बरों, वैभव, मस्ती और आमोद-प्रमोद का वर्णन अनन्यतम ही कहा जाएगा।

ऐसे तो मैं विज्ञान का कार्य करता हूं, फिर रामायण जैसे साहित्यिक कार्य में मन क्यों मुड़ा और रमा? कहना कठिन है, परंतु पिछले तीस सालों से मैं संस्कृत भाषा का अध्ययन कर रहा हूं और उसके अकूत साहित्यिक भंडार में छिपे मोतियों का रसास्वादन करता रहा हूं। कुछ साल पहले यह जानने की इच्छा व उत्कंठा चित्त को व्यग्र करने लगी कि संस्कृत भाषा की उत्पत्ति और इसकी आयोजना कैसे हुई होगी? सोचा कि रामायण पढ़ूं तो स्यात इस उधेड़बुन का कुछ सुराग मिल जाए। बचपन में सुनता था कि रामायण रस का काव्य है, तो मन में प्रश्न उठा कि शब्दों से रस कैसे पैदा होता है? यह जाने, समझे बिना मूल प्रश्न का जवाब नहीं मिल सकेगा।

ऐसे ही अनेक बुनियादी प्रश्नों के साथ सन् २०१३ की पांच मई को स्थानीय साईं मंदिर में मेरे रामायण अध्ययन का आरंभ हुआ। हम कुछेक संस्कृतप्रेमी मित्र महीने में दो बार वाल्मीकि रामायण के करीब दो सौ श्लोकों का पारायण करते हैं, उनका अर्थ गुनने का प्रयास करते हैं और रस में डूबे आगे बढ़ते हैं।

अमेरिका में प्रवासी भारतीय समाज अब स्थापित हो चुका है। लगभग पचास साल पहले जब भारतीयों का यहां

आना आरंभ हुआ, किसे अनुमान था कि घर-बार छोड़ कर लोग अमेरिका में ठहरेंगे? लेकिन भारतीय समुदाय बड़ा जीवटवाला निकला। थोड़े ही समय में इसने पैर जमा लिए और आज वे भिन्न-भिन्न व्यवसायों व नौकरियों में लगे हुए हैं। वे अपेक्षाकृत साधन-सम्पन्न हैं, अलबत्ता, उनकी संस्कृति-चेतना अभी नहीं जग पाई है। संस्कृति के नाम पर थोड़े बहुत मंदिर अवश्य बन गए हैं, परंतु भारत के गहरे, प्रभावी और व्यापक दर्शन और उसके अकूत साहित्य भंडार के प्रति गौरव का भाव प्रवासी भारतीय समुदाय में नहीं पनप पाया है, समालोचना की तो खैर बात ही दूर है। समय के साथ-साथ प्रवासी भारतीय समाज प्रौढ़ हुआ और दूसरी पीढ़ी आगे आने लगी। ये बच्चे देखने में भारतीय जरूर लगते हैं, पर उनके रंग-ढंग दूसरे ही हो गए। इन बच्चों को भारतीय ज्ञान का रसास्वादन हो सके इसकी न व्यवस्था हो पाई, न वातावरण ही बन पाया। अपनी-अपनी डफली, अपना-अपना राग वाली कहावत इस प्रसंग में सटीक बैठती है।

विश्वामित्र सरीखे दूसरे प्रकार के लोग अपने साधन यानी अपने बाहुबल पर विश्वास करते हैं। वे कठोर तप करते हैं, यज्ञ करते, करवाते हैं और उन्हें पृथ्वी, वायु, अंतरिक्ष आदि का समुचित ज्ञान है। तपस्या से और-और ज्ञान अर्जित करने की उनकी लालसा कभी रुकती नहीं।

ऐसी द्विविधा में मन बरसों डूबा रहा कि अचानक ख्याल आया कि वाल्मीकि की रामायण को इन बच्चों का सांस्कृतिक साथी बनाया जा सकता है। बस शुरू हो गई खोज! रामायण के अंग्रेजी अनुवाद देखे तो वे नासमझी भरे, छिछले ही नहीं, पूर्णतः अशुद्ध भी निकले। निष्कर्ष निकला कि इनसे उद्देश्य-सिद्धि नहीं हो सकती। रामायण के नाटक, संगीत, एकांकी और उसमें प्रदर्शित भावों से प्रवासी-भारतीय बच्चे प्रभावित होंगे और नए तरह के ऑपरा, म्यूजिकल आदि से यह कार्य आसान हो सकता है। ऐसे में प्रश्न उठा कि रामायण के पात्रों की भाव-भंगिमा व प्रभावोत्पादकता जो आदिकवि वाल्मीकि ने उकेरी है, वह कैसे सुनिश्चित होगी? उपलब्ध सभी अंग्रेजी अनुवाद इस दृष्टि से अनुपयोगी प्रतीत हुए। तब मैंने भारतीय बच्चों के लिए वाल्मीकि रामायण के अनुवाद का बीड़ा उठाया। कार्य प्रगति पर है, और ग्त्मब्ढ्ठ.डत्वृन्त्रढ्ढृढ्ढड्ढद्रढ्ढड्ढमम.ड़दृश् ब्लाग साईट पर अब तक के कार्य का विवरण उपलब्ध है। 'गर्भनाल' के पाठक मुझे अपना मंतव्य भेजें तो अच्छा लगेगा।

यह तो रही प्रासंगिक पूर्व-पीठिका अब चलते हैं अवलोकन और चिंतन में। जब हम रामायण पढ़ते हैं, मन में अनेक विचार उभरने लगते हैं। प्रत्येक व्यक्ति अपने ढंग से सोचेगा ही, परंतु मेरा जो विचार है वह 'गर्भनाल' के सम्पादक के अनुरोध पर पत्रिका में धारावाहिक स्तंभ के रूप में प्रकाशित होगा। मेरा प्रयास रहेगा कि प्रति दो माह 'रामायण : आधुनिक विमर्श' शीर्षक स्तंभ के अंतर्गत आपको कुछ मौलिक विचारों से अवगत करा सकूं। भारत से दस हजार मील की दूरी से यह हिंदी योगायोग मुझे आनंद देगा, आपको भी इसके रस की कुछ अनुभूति करा सकूं तो सोने में सुहागा!

वशिष्ठ और वाल्मीकि

अभी हम बालकांड समाप्त कर अयोध्याकांड के मध्य में पहुंचे हैं। इस आलेख का बाकी हिस्सा बालकांड के विविध प्रसंगों पर केंद्रित रहेगा। हम जानते हैं कि रचनाकार अपने समाज का प्रतिनिधि होता है और रचनाएं समकालीन समाज का आईना होती हैं। आइए, अब महाकवि वाल्मीकि की सामाजिक दृष्टि पहचानने की कोशिश करें।

बालकांड में दो मुख्य चरित्र हैं। एक हैं ईक्ष्वाकु कुलगुरु वशिष्ठ और दूसरे हैं महर्षि विश्वामित्र। दोनों के जीवन-दर्शन अलग हैं - वशिष्ठ तपोनिष्ठ, सदाचारी और सत्य के उपासक हैं। वे वेदज्ञ हैं और समाज के नैतिक मूल्यों की रक्षा उनकी परंपरा है। संभवतः इसी कारण उन्हें ब्रह्मर्षि कहा गया। मैं उन्हें ब्रह्मवादी कहूंगा।

कौन हो सकता है ब्रह्मवादी? पहली बात, ब्रह्मवादी वह है जो ब्रह्म को स्वीकार करता है। ब्रह्म को स्वीकार करने का अर्थ हुआ कार्य-कारण संबंध को स्वीकार करना और कार्य-कारण स्वीकार करने से यह उत्पत्ति सहज निकलती है कि सभी कार्यों का कोई न कोई कारण होता है और अंततः सभी कार्य सत्य हैं क्योंकि उनका मूल, उनका उद्‌गम ब्रह्म से है। यानी, सृष्टि और उसकी सभी स्थितियों व कारणों के पीछे ब्रह्म है। व्यावहारिक लोग यह भले न पूछें कि ब्रह्म है कौन, परंतु वे यह अवश्य मानते हैं कि सभी में ब्रह्म समाया हुआ है।

ब्रह्मवादी जानते हैं कि आदमी की सबसे बड़ी शक्ति उसका 'मन' है। मनोबल सभी प्रकार के कार्यों का साधन है। लेकिन ऐसा भी नहीं कि 'मन' हमारे नियंत्रण में है, उसे नियंत्रण में करना होता है जिसके लिए निष्ठापूर्वक प्रयास आवश्यक होता है। प्रयास करें तो मन पर नियंत्रण में कामयाबी किसी को भी मिल जाए। इसी 'मन' की तुलना ब्रह्म से भी की जाती है और संभवतः इसीलिए जीवन की सारी सफलताओं का श्रेय आज भी ब्रह्म को दिया जाता है - मनोबल के सहारे कुछ भी असाध्य नहीं।

विश्वामित्र सरीखे दूसरे प्रकार के लोग अपने साधन यानी अपने बाहुबल पर विश्वास करते हैं। वे कठोर तप करते हैं, यज्ञ करते, करवाते हैं और उन्हें पृथ्वी, वायु, अंतरिक्ष आदि का समुचित ज्ञान है। तपस्या से और-और ज्ञान अर्जित करने की उनकी लालसा कभी रुकती नहीं। इसका अर्थ हुआ कि वे यह मानते हैं कि सारे साधन उनकी चेष्टा के फल हैं। वे मनोबल का उपयोग अपने दूसरे मनोरथ पूरा करने में करते हैं। उन्हें यह नहीं पता है कि 'मन' के पार भी एक सत्ता है, न ही उन्हें उसे खोजने की अभीप्सा ही है। परिणामतः उनका मन अस्थिर रहता है। वे विश्व की सारी शक्तियां अपने वश में कर लेना चाहते हैं, उनकी इच्छा पृथ्वी पर राज करने की है और इस इच्छा की पूर्ति के लिए वे काफी मेहनत करते हैं।

बालकांड में इन दोनों धाराओं के बीच टकराव झलकता है और वाल्मीकि की कहानी में वशिष्ठ की जीत होती है। विश्वामित्र के सभी अस्त्र-शस्त्र वशिष्ठ के डंडे मात्र से नष्ट हो जाते हैं और लज्जित विश्वामित्र ब्रह्म के संधान में भागते हैं। शायद ब्रह्मवादी की जीत ही वाल्मीकि की कहानी है - रामचंद्र ऐसे ही ब्रह्मवादी के शिष्य हैं और अपने आचार्य से वे वही ब्रह्मवाद सीखते हैं। राम का चरित्र संभवतः इसी कारण लोकमानस में बैठ सका। इसका विस्तार अगले आलेख में।■